SJIF Impact Factor 5.554

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April - June 2021 Vol.02 Issue VI

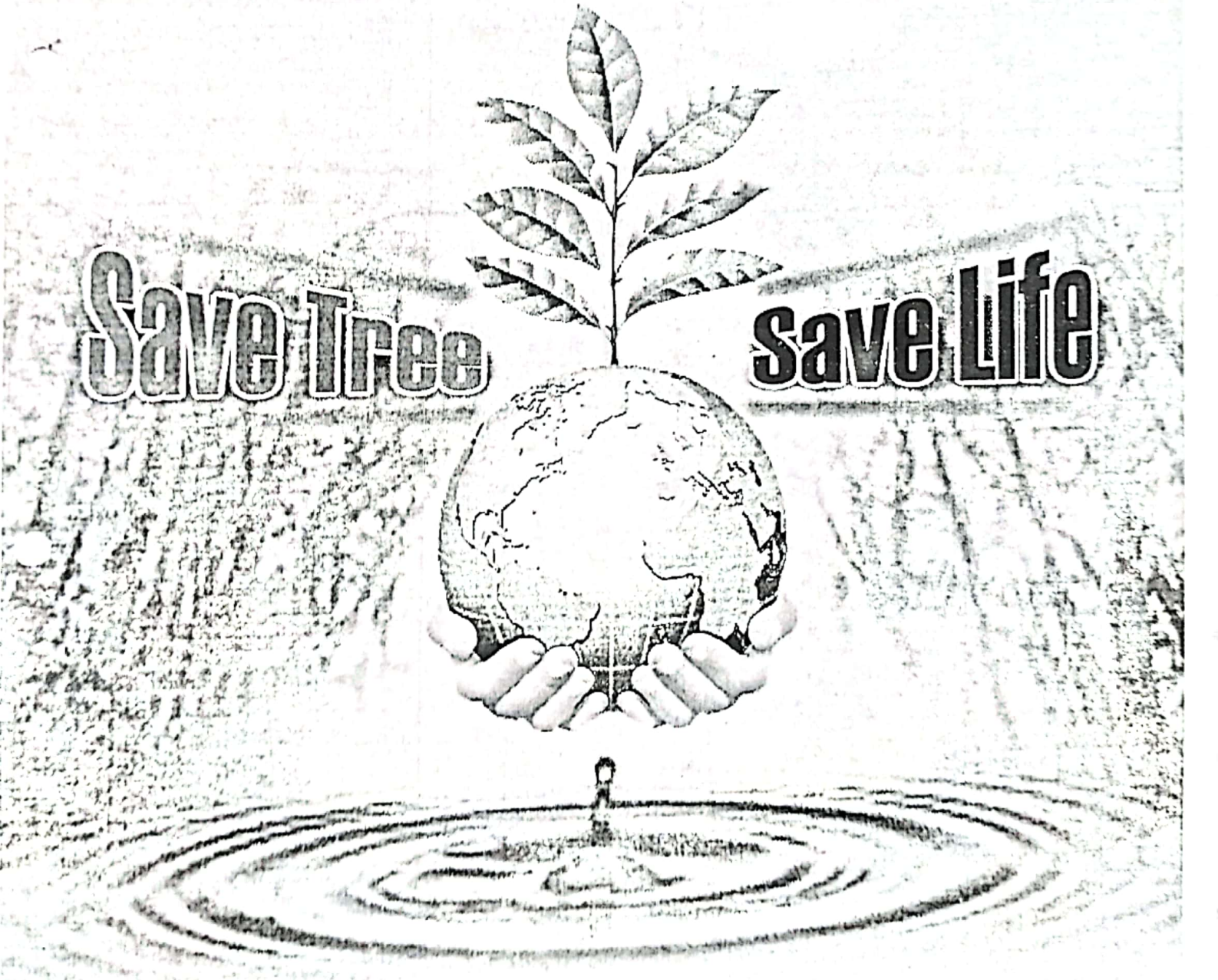

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
15	हिंदी की प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' एवं मराठी की स्नेहप्रभा प्रधान की आत्मकथा 'स्नेहांकिता' का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाधव	69
16	राज्य एवं न्याय व्यवस्था का भारतीय चिंतन	अंचल सक्सेना	73
17	मानवाधिकार में पत्रकारिता की भूमिका	प्रा.डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	78
18	सतना जिले में गोवंश आधारित व्यवसाय का विश्लेषणात्मक अध्ययन	मोहम्मद आरिफ डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा	81
19	साहित्यकार का सामाजिक दायित्व	डॉ. रमेश टी. बावनथडे	86
20	सुशीलकुमार सिंह के नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्या-जातिभेद	प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर	89
21	हिंदी भाषा के प्रचार में सोशल मीडिया का योगदान	नरेन्द्र सोनी	92
22	रविभाण सम्प्रदाय में गुरु की संकल्पना	डॉ. सुनीता शर्मा	95
23	मानवीकरण एवं नई शिक्षा नीति	डॉ. शीतल प्रसाद महेन्द्रा	102
24	रागदरबारी उपन्यास में मूल्य-विघटन	प्रा.कोलते नितीन विजयकुमार	108
25	बी.एड. पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व	मोनिका चौबे	111
26	राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में चित्रित महानगर	रीता कुमारी देव	115
27	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोक संवेदना	डॉ. अनुपम गुप्ता	119
28	'बदलते रूप' नाटक में चित्रित पारिवारिक विघटन	प्रा. नीता पोपट साठे	124
29	कोविड-19 महामारी – परिवार पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (मुरैना जिले के अंबाह तहसील के संदर्भ में)	डॉ. रक्षा कम्ठान	126
30	बिहारी के काव्य में ज्योतिष चमत्कार	डॉ. पूर्णिमा अग्रवाल	131
31	डॉ. शंकर शेष के नाटक 'रक्तबीज' में मिथकीय प्रयोग	डॉ. दादासाहेब नारायण डांगे	134
32	वैश्वीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव	डॉ॰ अर्चना हजारिका	138
33	वैश्विकरण के सन्दर्भ में लोप होते राष्ट्र, राज्य और भारतीय ग्राम	डॉ. मोहसिन रशीद शेख	142
34	"राष्ट्र-प्रेम की अद्भूत धरोधर:आहुति"	श्री.रविंद्र पुंजाराम ठाकरे प्रो.डॉ.अनिता पोपटराव नेरे	148
35	प्रेमचंद के कथा सागर में सूक्तियों के मुक्ता - माणिक्य	डॉ. सुधा त्रिवेदी	151
36	स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका	डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील	157
37	वेदों में मानसिक स्वस्थ्य	डॉ. विनोद श्रीराम जाधव	160

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

34

राष्ट्र-प्रेम की अद्भूत धरोधर : आहुति

श्री.रविंद्र पुंजाराम ठाकरे
शोध छात्र

प्रो.डॉ.अनिता पोपटराव नेरे
शोध निर्देशक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय,
मालेगाँव-कैम्प,जिला-नासिक(महाराष्ट्र)
दूभाष:9822916518

भूमिका :- भारतीय साहित्य में महाकाव्य की अवधारणा अत्यंत व्यापक है। भारत में महाकाव्यों की प्रशस्त परंप महाकाव्य श्रेष्ठतम काव्य रूप है। इसमें जीवन का सर्वांगीण विकास प्रस्तुत किया जाता है। राष्ट्रकवि बृजेश सिंह आधुनि के मर्धून्य साहित्यकार हैं। इनका 'आहुति' राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति और आत्मबलिदान का अद्भूत महाकाव्य है। इस महाका बारह सर्ग हैं 1. चिन्तनालोक, 2. स्वर्ण विहंग, 3. मेवाड़-दर्शन, 4. बलिदान, 5. प्रतापोदय, 6. हल्दीघाटी, 7. महासंग्र पाखण्ड, 9. अस्मिता शंखनाद, 10. आव्हान, 11. उद्बोधन और 12. निष्कर्ष। महाकाव्य का नायक कोई देवता या धी सद्वंशोद्भूत क्षत्रिय होता है।'आहुति'महाकाव्य प्रतीकात्मक है। "राष्ट्रीय चेतना" इसकी नायिका और 'राष्ट्रधर्म' इसक है, जो समय-समय पर अनेक स्वतंत्रताकामी महापुरुषों के रूप में महाकाव्य को उद्देश तक पहुँचाता है। एक ही वंश के सकते हैं – इस निष्कर्ष पर 'आहुति' खरा उतरा है, क्योंकि इसके सभी नायक भारतवंशी हैं। इन नायको में केंद्रीयचरित्र राज्य के महाराणा प्रताप का है। महाराणा प्रताप धीरोदत्त नायक है। वे शुर-वीर, गंभीर, क्षमाशील, स्वाभिमानी, व्यवहार,शास्त्रज्ञाताऔर शरणागतवत्सल है।

'आहुति' महाकाव्य में सभी रसों का सुंदर परिपाक हुआ है। इसमें वीर रस अंगीरस है तो शान्त उसका सहाय इसका कथानक ऐतिहासिक, सज्जनोदययुक्त तथा उद्देश्यपरक है। धर्म संस्थापन इसका फल है। मंगलाचरण में नमस्कारा है किन्तु महाकवि बृजेश सिंह संस्कृत के प्रकाष्ठ पंडित है अतः अपनी प्रतिभा हेतु उन्हें मंगलाचरण संस्कृत भाषा में लिख

"पेयो राष्ट्ररसो नित्यं धेयेः श्रीपरमेश्वरः।
श्रेयः सर्वस्व लोकस्य विदधातु गणाधिपः ॥
आहुतिर्नामकाव्यं में भूयातसर्वसुखप्रदम्।
प्रीयतां राष्ट्रदेवश्च सपर्ययोनयाकृतः ॥"[1]

राष्ट्रकवि डॉ. बृजेश सिंह ने गणेश, सरस्वती, श्रीराम और श्रीकृष्ण की वन्दना करके मंगलाचरण पूर्ण किया है। राष्ट्रदेव को भी प्रणाम किया है। 'आहुति' महाकाव्य में विविध मात्रिक और वर्णिक छंदों का भी सफल चित्रण हुआ 'पंचचामर' छंद कवि का प्रिय छंद रहा है जिसका कविने यथासंभव प्रयोग कर महाकाव्य के सौष्ठव में वृध्दि की है। वन, नगर, उपनगर, सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रधर्म, युध्दरणप्रयाण आदि का भी यथावसर चित्रण किया है। नामकरण प्रवृत्ति के आधार पर तथा सर्गो का नामकरण सर्ग में वर्णित कथा के आधार पर किया गया है। लोकमंगल की राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रोत्कर्ष की कामना का उद्देश्य रखकर कवि बृजेश सिंह ने 'आहुति' महाकाव्य का सृजन किया है। कवि भूमि की एकता – अखण्डता को साकार रखकर किसान, विज्ञान, नेता, संत, महापुरुष आदि के योगदान को युवा पीढ़ी के रखना चाहते हैं। देश की जनता के सामने कर्तव्य बोध कराना कवि का लक्ष्य है। अतः 'आहुति'महाकाव्य में कुटुम्बकम्' के साथ-साथ लोकमंगल और राष्ट्रसम्मान की कामना चरितार्थ हुई है।

'आहुति' महाकाव्य का मूलस्वर भारतीय संस्कृति एवं संस्कार की रक्षाकरने के साथ-साथ मातृभूमि क को समार्पित करना है। 'आहुति'महाकाव्य का प्रथम सर्ग 'चिन्तनालोक' भारतीय दर्शन और अध्यात्म बौध्द-जै परम्पराओं का उत्तम नमूना है। भारतीय संस्कारों का उल्लेख करते हुए कवि लिखते हैं– "जब जब पथ विचलि ऋषि मुनियों ने पथ दिखलाया। / सत्यं शिव सुन्दर भावच्छवि / से कर्मयोग ध्वज लहराया ॥"[2]

Scanned with CamScanner

ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
April-June 2021 Vol.02 Issue VI SJIF Impact- 5.54

स्वर्ण विहंग' नामक द्वितीय सर्ग में भारतवर्ष की समृध्दि का मार्मिक चित्रण किया गया है। इसी स्वर्ण विहंग के सौंदर्य ने ... आक्रान्ताओं को आकृष्ट किया। इसी स्वर्णाभरण की आकांक्षा में विश्वजयी सम्राट सिकन्दर का सेनापति सिल्युकस ... जिसे सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की वीरता के आगे हार माननी पड़ी। इस सर्ग में तक्षशिला विश्वविद्यालय के महान स्नातक ... चाणक्य के नीति-निष्णात स्वरूप के अतिरिक्त यवन शासक मुहम्मद-बिन-कासिम का भारत पर आक्रमण और सिन्ध के ...हिरसेन एवं उनके परिवार का राष्ट्ररक्षा हेतु बलिदान चिरस्मरणीय बन पड़ा है।

'आहुति' महाकाव्य का तृतीय स्वर्ग'मेवाड़-दर्शन' राजस्थान की बलिदानी माटी की शोभा का गौरवगान करता है। इसमें ... वीर बप्पा रावल (कालभोज) और उनके वंशजों ने एक हजार वर्ष तक स्वातंत्र्य-ज्योति को जिस आस्था और निष्ठा के ... जागृत रखा, उसे महाकवि डॉ. बृजेश सिंह ने अत्यन्त सुंदर शैली में चित्रित किया है।

चतुर्थ स्वर्ग 'बलिदान' में तुर्कों एवं मुगलों से संघर्षरत राजस्थानी महायोध्दाओं–महाराणा हम्मीरदेव, महाराणा कुम्भा, ... सांगा आदि के शौर्य की गाथाओं का काव्यात्मक वर्णन किया है। खिलजी वंश के अल्लाउद्दीन की सौंदर्यलिप्सा और ...लुप्ता तथा अपने सतीत्व की रक्षा करनेवाली महाराणी पद्मिनी का 'जौहरव्रत' आततायी प्रवृत्ति के विरुध्द भारतीय सतीत्व ... मान की विजय पताका की याद दिलाता है। अकबर की साम्राज्यवादी कुत्सित नीतियों के अंतर्गत चितौड़गढ पर होते ... और निर्दोष प्रजा के नर-संहार का रोमांचक वर्णन राष्ट्रकवि ने'बलिदान' सर्ग में किया है।

कवि ने पंचम सर्ग 'प्रतापादेय' में महाराणा प्रताप के उदय की घटनाओं का सजीव चित्रण किया है। महाराणा 'आहुति' ...काव्य के चरितनायक है। इस सर्ग में स्वातंत्र्यचेता महाराणा प्रताप का उदात्त चरित्र काव्यबध्द किया गया है। हल्दीघाटी के ... संग्राम के पूर्व युध्द की तैयारी में मग्न राणा का ओजस्वी, बलशाली एवं पराक्रमी व्यक्तित्व 'प्रतापोदय' सर्ग की विशेषता है महाराणा रणभूमि में विजयी होने से पूर्व भगवान शिवशंकर की इसप्रकार आराधना करते हैं –

"मातृभूमि रक्षा हेतु करके प्रतिज्ञा दृढ,
किया शंखध्वनि से संकेत रणाहवान का।
हर हर महादेव शंकर की जय बोल,
राष्ट्र-हेतु माँगा वर निज बलिदान का॥
ताण्डव का पदक्षेप रण-बीच होने लगे,
इसलिए स्वर टेरा भीष्म रणगान का।
महाबली राणा ने समरजयी होने हेतु,
लिया वरदान एकलिंग भगवान का॥"[3]

षष्ठ सर्ग 'हल्दीघाटी' में महाराणा प्रताप एवं अकबरी सेना के बीच हुए'हल्दीघाटी' नामक महायुध्द का जीवंत चित्रण हुआ है। इसमें सेनानायक हाकिम सूर पठाण, ग्वालियर-नरेश रामसिंह तोमर, भामाशाह, ताराचंद, भीलों के सरदार पुंजा आदि अनेक वीरों के दैदीप्यमान पराक्रम और युध्द कौशल्य को कवि बृजेश सिंह ने चित्रित किया है –

"रामशाह तँवर की कीर्ति-कामिनी सुभग,
उमपा नहीं थी स्वाभिमान के महत्ता की।
रुण्ड-मुण्ड को गिराती करवाल थी निराली,
मानो जीभ, लपकाती काली कलकत्ता की॥
थर थर काँप रही चमू जगन्नाथ की ज्यों,
चक्रवात होती गति पीपल के पत्ता की॥
शत्रुओं को फेंका है महावर के लत्ता सम,
वीरों ने किया है मान-भंग परवत्ता की॥"[4]

अर्थात जिस प्रकार माँ दुर्गा महिषासुर असुर का वध करके उसका शव उसी प्रकार फेंक देती है। जिस प्रकार सौभाग्यवती नारी महावर लगाकर 'लत्ते' को फेंक देती है। मेवाड़ के वीरों ने पराधीनता का मान-भंग करते हुए शत्रुओं का महावर के लत्ता के समान उठाकर फेंक दिया है। कवि ने इस सर्ग में वीर रस का सुंदर परिपाक किया है।

Scanned with CamScanner